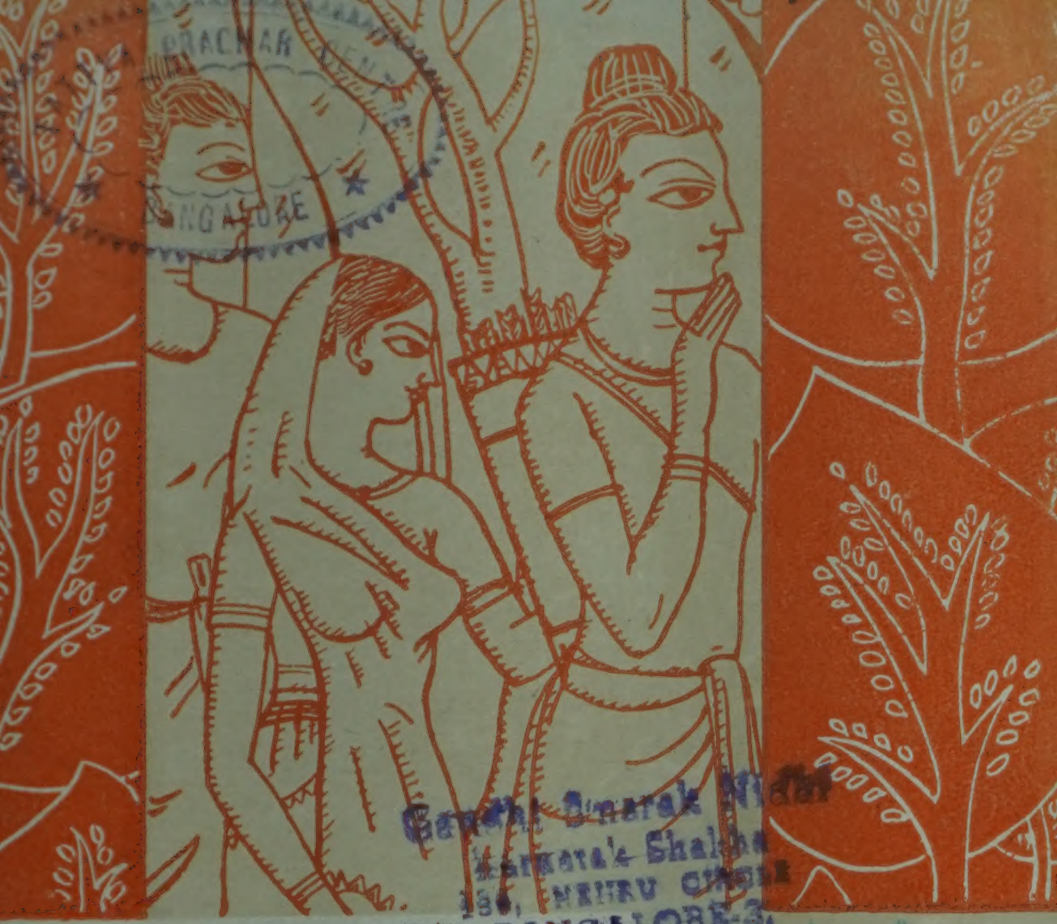

Gandhi Smarak Nidhi
Karnataka Shakha
NEHRU CIRCLE
BANGALORE-3.

# राज तिलक

101
0152.1TUL
W3N57
H-000795

795

तुलसी-राम-कथा--१४

# राजतिलक

विश्वम्भरसहाय 'प्रेमी'

TATTVA PRACHAR CENTRE
BANGALORE

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE.....
ACC. NO.....9323.....
CALL NO.....
BANGALORE-1.

तुलसीदासजी के 'रामचरित-मानस' के आधार पर
भगवान राम की
सरल एवं रोचक कहानी

सत्साहित्य प्रकाशन

१९५८

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

H.000745
0152 1TUN
W3 N57

पहली बार : १९५८
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
दिल्ली

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE.....
ACC. NO.....
CALL NO.....
BANGALORE-1.

# प्रकाशकीय

हमारे देश में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा, जिसने राम का नाम न सुना हो और राम-कथा से परिचित न हो। क्या अमीर, क्या गरीब; क्या छोटा, क्या बड़ा; क्या शहरी, क्या ग्रामीण; सभी राम का नाम सुनकर गद्‌गद् हो जाते हैं। उनके नाम में कुछ ऐसा जादू है कि एक बार सुनकर तृप्ति नहीं होती, बार-बार सुनने को जी चाहता है।

हमारी बहुत दिनों से इच्छा थी कि राम-कथा के मुख्य-मुख्य प्रसंग लेकर इस ढंग से प्रस्तुत करें कि सामान्य पढ़े-लिखे पाठक भी उन्हें आसानी से समझ सकें और उसमें रस ले सकें। इसी उद्देश्य को सामने रखकर यह पुस्तकमाला निकाली गई है। 'रामायण' में पूरी राम-कथा दी हुई है। उसीमें से क्रमबद्ध घटनाएं लेकर ये पुस्तकें तैयार की गई हैं। पाठकों के लाभ और विषय की रोचकता की दृष्टि से बीच-बीच में कुछ चौपाइयां-दोहे भी डाल दिये गए हैं।

हमें विश्वास है कि यह माला पाठकों को पसंद आयगी और वे इसको घर-घर पहुंचाने में मदद देंगे।

प्रत्येक पुस्तक में कुछ चित्र भी दिये गए हैं।

—मंत्री

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE.....
ACC NO.....
CALL NO.....
BANGALORE-1.

# विषय-सूची

१. अयोध्या को प्रस्थान ५
२. मार्ग में ८
३. हनुमान भरत से मिले ११
४. आनंदमग्न अयोध्या १७
५. मंगल मिलन २०
६. राम का राजतिलक २५
७. मित्रों को बिदाई ३०

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE.....
ACC NO.....
CALL NO.....
BANGALORE-1.

# राजतिलक

: १ :

## अयोध्या को प्रस्थान

सीताजी की अग्नि-परीक्षा के पश्चात् देवताओं ने श्रीराम की वंदना की। इस अवसर पर वहां ब्रह्मा तथा इंद्र भी आये। कथा में आता है कि श्रीराम ने इच्छा प्रकट की कि जो वानर मरे पड़े हैं वे फिर से जीवित हो जायं। इंद्र ने अमृत-वर्षा करके उन्हें फिर से जीवित किया। वे हर्षित होकर खड़े होगये और श्रीराम का गुण-गान करने लगे।

विभीषण ने रामचंद्रजी से वहां कुछ समय और ठहरने की विनती की परंतु उन्होंने उसे समझाते हुए कहा, "भरतजी तपस्वी वेष में मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। यदि देर होगई और निश्चित समय निकल गया तो मैं उनको जीवित न देख सकूंगा।"

बीते अवधि जाउँ जौं, जियत न पावौं बीर।
सुमिरत अनुज प्रीति प्रभु, पुनि-पुनि पुलक सरीर॥

राम के इस प्रकार समझाने पर विभीषण चुप होगया। वह तो अपना प्रेम ही प्रकट कर सकता था। राम को अयोध्या पहुंचने की बड़ी जल्दी थी। अब विभीषण अपने महल की ओर चल दिया।

बहुरि विभीषन भवन सिधायो।
मनिगन बसन बिमान भरायो॥

लै पुष्पक प्रभु आगें राखा।
हँसि करि कृपासिंधु तब भाषा॥
चढ़ि बिमान सुनु सखा बिभीषन।
गगन जाइ बरषहु पट भूषन॥

विमान पर बैठ कर विभीषण ने मणियों और वस्त्रों की वर्षा की

विभीषण ने अपने राज-महल में पहुंचकर एक विमान में बहुत-सी मणियां और बहुत-से सुंदर-सुंदर वस्त्र भर लिये। वह उस विमान को लेकर श्रीराम के पास आया। सारी वस्तुएं उसने श्रीराम के सम्मुख रख दीं।

कृपा के सागर श्रीराम ने हँसकर कहा, "हे मित्र विभीषण सुनो! तुम विमान में चढ़कर ऊपर आकाश में जाओ और वहां पहुंचकर इन वस्त्रों और आभूषणों की वर्षा कर दो।"

नभ पर जाइ विभीषन तबही ।
बरषि दिये मनि अंबर सबही ।।

विभीषण ने राम की आज्ञा मान ली। वह विमान में बैठकर ऊपर आकाश में उड़ा। वहां पहुंचकर उसने मणियों और वस्त्रों की वर्षा कर दी।

जोइ जोइ मन भावइ सोइ लेहीं ।
मनि मुख मेलि डारि कपि देहीं ।।
हँसे रामु श्री अनुज समेता ।
परम कौतुकी कृपानिकेता ।।
भालु कपिन्ह पट भूषन पाए ।
पहिरि पहिरि रघुपति पहिं आए ।।

विमान में से गिरती हुई वस्तुओं में से जो जिसके मन को अच्छा लगता था वह उसे ले लेता था। वानर मणियों को खाने की वस्तु समझकर अपने मुख में डालते और फिर कोई स्वाद न आने पर उन्हें बाहर निकालकर फेंक देते। यह तमाशा देखकर परम विनोदी और कृपा के धाम श्रीराम, सीता और लक्ष्मण सभी हँसने लगे।

वानर और भालुओं ने अपनी इच्छा के अनुसार बहुत-से आभूषण और वस्त्र पहन लिये। उन्हें पहनकर वे श्रीराम की सेवा में पहुंचे।

श्रीराम ने उनको देखकर सबके प्रति अपना प्रेम-भाव दिखाया और कहा, "मैंने तुम सबके बल पर ही लंका पर विजय पाई है।"

तुम्हरे बल मैं रावनु मार्‌यो ।
तिलक बिभीषन कहँ पुनि सार्‌यो ।।

निज निज गृह अब तुम्ह सब जाहू ।
सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहू ॥

राम कहने लगे, "तुम्हारे बल पर ही मैंने रावण को मारा है। और विभीषण का राजतिलक किया। अब तुम सब अपने-अपने घर चले जाओ। मेरा स्मरण करते रहना और कभी किसीसे मत डरना।"

वानर राम की बात सुनकर कहने लगे, "हे प्रभु, आप जो भी कहें ठीक है परंतु आपकी बात सुनकर हमारे मन में आपके प्रति अधिक मोह और प्रेम पैदा हो रहा है।"

राम उनकी बात समझ गये कि वे वापस जाने में दुख अनुभव कर रहे हैं। परंतु उन्होंने समझाया कि सबका अपने-अपने घरों को लौट जाना ही ठीक है।

श्रीराम की आज्ञा मानकर ये सब वानर अपने-अपने घर को चल दिये। परंतु सुग्रीव, नील, जामवंत, अंगद, नल, हनुमान और विभीषण ये सब जलभरे नेत्रों से श्रीराम की ओर देखने लगे। राम ने इनकी भावना को परख लिया। वह समझ गये कि ये सब उनके साथ अयोध्या चलने के लिए इच्छुक हैं। ऐसा समझकर उन्होंने इन सबको विमान पर चढ़ा लिया। इसके पश्चात् विमान ऊपर उड़ा और फिर उत्तर दिशा की ओर चल दिया।

: २ :

## मार्ग में

आकाश मार्ग से जिस समय विमान अयोध्या की ओर जा रहा था तो श्रीराम ने सीताजी को मार्ग की बहुत-सी बातें बताई।

कह रघुबीर देखु रन सीता ।
लछिमन इहां हत्यो इँद्रजीता ।।
हनुमान अंगद के मारे ।
रन महि परे निसाचर भारे ।।
कुम्भकरन रावण द्वौ भाई ।
इहां हते सुर मुनि दुखदाई ।।

राम कहने लगे, "सीता ! इस रणभूमि को देखो । यह वह भूमि है जहां लक्ष्मण ने इंद्रजीत को मारा था । आगे वह स्थान है जहां हनुमान तथा अंगद के मारे हुए निशाचर पड़े हुए हैं । इससे आगे वह स्थान है जहां देवताओं और मुनियों को सतानेवाले कुम्भकरण और रावण दोनों भाई मारे गये थे ।"

इसके पश्चात् श्रीराम ने सीताजी को समुद्र पर बांधा गया पुल दिखाया और श्री रामेश्वर के दर्शन कराये । विमान कुछ ही देर में दंडकवन पहुंच गया । यहां उनकी अगस्त्य मुनिसे भेंट हुई थी । श्रीराम बहुत-से मुनियों के दर्शनों के लिए गये । उनका आशीर्वाद पाया । फिर वे चित्रकूट पहुंचे । वहां भी उन्होंने मुनियों से भेंट की ।

वहां से विमान बड़ी तेज गति से अयोध्या की ओर चला । श्रीराम ने सीताजी को यमुना के दर्शन कराये । इसके पश्चात् उन्होंने गंगा के दर्शन कराये । सीताजी ने गंगा को प्रणाम किया ।

पुष्पक विमान में बैठे-बैठे इन्होंने तीर्थराज प्रयाग और त्रिवेणी के दर्शन किये । उन्होंने दूर से अयोध्यापुरी को भी देखा । राम प्रयागराज में त्रिवेणी तट पर उतरे । यहां उतरकर उन सबने त्रिवेणी में स्नान किया । स्नान के बाद उन्होंने ब्राह्मणों को बहुत-सा दान भी दिया ।

प्रभु हनुमन्तहिं कहा बुझाई।
धरि बटुरूप अवधपुर जाई॥
भरतहिं कुसल हमारि सुनाएहु।
समाचार लै तुम्ह चलि आएहु॥

श्रीराम ने हनुमान को समझाकर कहा, "तुम ब्राह्मण का रूप बनाकर अयोध्या में जाओ। वहां भरत से मिलकर हमारी कुशलता सुनाओ और फिर उनका कुशल समाचार लेकर वापस आ जाओ।"

तुरत पवन सुत गवनत भयऊ।
तब प्रभु भरद्वाज पहिं गयऊ॥
नाना विधि मुनि पूजा कीन्हीं।
अस्तुति करि पुनि आसिष दीन्हीं॥

राम की आज्ञा पाकर हनुमान तुरंत भरतजी से मिलने चल दिये। श्रीराम प्रयागराज में भारद्वाज मुनि से भेंट करने चले गये। मुनि ने नाना प्रकार से उनका सत्कार किया और उनको आशीर्वाद दिया। रामचंद्रजी ने दोनों हाथ जोड़कर मुनि की वंदना की। इसके पश्चात् रामचंद्रजी फिर विमान में चढ़े और आगे चले। गंगा के पार पहुंचने से पहले ही उनका पता निषादराज को चल गया।

इहां निषाद सुना प्रभु आए।
नाव नाव कहं लोग बोलाए॥

जब निषाद ने सुना श्रीराम आ गये हैं तो उसने "नाव कहां है? नाव कहां है?" पुकारकर सब लोगों को बुला लिया। इसके बाद राम दूसरी ओर चले गये। दूसरी ओर पहुंचकर सीताजी ने गंगा की पूजा की। पार पहुंचने पर राम का विमान फिर नीचे उतरा।

सुनत गुहा धायउ प्रेमाकुल ।
आयउ निकट परम सुख संकुल ।।
प्रभुहि सहित बिलोकि बैदेही ।
परेउ अवनि तन सुधि नहिं तेही ।।
प्रीति परम बिलोकि रघुराई ।
हरषि उठाइ लियो उर लाई ।।

राम के गंगा-तट पर आ जाने का समाचार पाकर निषाद प्रेम में भरा हुआ, परम सुख का अनुभव करता हुआ श्रीराम के समीप आया। श्रीराम और सीताजी को देखकर निषाद प्रेमवश पृथ्वी पर गिर पड़ा। राम के प्रेम में वह इतना डूब गया कि उसे अपने शरीर की भी सुध न रही। श्रीराम ने उसके अपार प्रेम को देखकर उसे पृथ्वी से उठाया और अपनी छाती से लगा लिया।

निषाद ने राम की विनती करते हुए कहा, "हे परम सुख के धाम रामजी! मैं तो आपके दर्शनमात्र से ही जीवनभर के लिए सुखी हो गया हूं। हे पूर्णकाय भगवान राम! मैं बार-बार आपके चरणों को नमस्कार करता हूं।"

करुणा के सागर राम ने अपने भक्त निषाद को भरत के समान बार-बार गले से लगाकर प्यार किया।

: ३ :

## हनुमान भरत से मिले

रहा एक दिन अवधि कर, अति आरत पुर लोग ।
जहं तहं सोचहिं नारि नर, कृसतन राम वियोग ।।

राम के आने में केवल एक दिन रह जाने से अयोध्या के

नर-नारी बड़े चिंतित होगये। राम के वियोग में उनका एक-एक पल कटना कठिन होगया। अयोध्यापुरी के नर-नारी जहां-तहां खड़े-खड़े राम के आने की चिंता करने लगे।

हनुमान के अयोध्या पहुंचने से पहले माताएं राम, लक्ष्मण और सीता के आने की प्रतीक्षा कर रहीं थीं। उनको तरह-तरह के शकुन दिखाई दे रहे थे। वे ऐसा अनुभव कर रही थीं कि राम, लक्ष्मण और सीता बनवास से लौट आये हैं। उसी समय भरत की दाहिनी आंख और दाहिनी भुजा बार-बार फड़क रही थी।

रहेउ एक दिन अवधि अधारा।
समुझत मन दुख भयउ अपारा॥
कारन कवन नाथ नहिं आयउ।
जानि कुटिल किधौं मोहि विसरायउ॥

भरतजी मन-ही-मन सोचने लगे कि प्राणों के सहारे का समय केवल एक दिन का ही रह गया है। इस बात का ध्यान आने से उन का मन व्याकुल हो उठा। वह बार-बार सोचने लगे कि राम किस कारण अभी तक नहीं लौटे। कहीं उन्होंने मुझे बुरा समझकर तो नहीं भुला दिया।

भरत अपने मन्द भाग्य पर दुखी होकर कहने लगे—

अह ह धन्य लछिमन बड़भागी।
राम पदार-विन्दु अनुरागी॥
कपटी कुटिल मोहिं प्रभु चीन्हा।
ताते नाथ संग नहिं लीन्हा॥

लक्ष्मण बड़ा ही भाग्यशाली है जो राम के कमलरूपी चरणों में अपना प्रेम रखता है। मुझे ऐसा लगता है कि

भगवान राम ने मुझे कपटी समझ लिया और इसलिए उन्होंने मुझे अपने साथ भी नहीं लिया।"

जन अवगुन प्रभु मान न काऊ ।
दीनबन्धु अति मृदुल सुभाऊ ।।

भगवान राम की दया और कृपा का विचार करते हुए भरत कहने लगे, "दीनबंधु राम बड़े कोमल स्वभाववाले हैं। वह अपने सेवक के अवगुणों की ओर कोई ध्यान नहीं देते हैं।"

मोरे जियं भरोस दृढ़ सोई ।
मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई ।।
बीतें अवधि रहहिं जौं प्राना ।
अधम कवन जग मोहि समाना ।।

फिर देर तक सोच करते-करते भरत कहने लगे, "मेरे हृदय में पक्का विश्वास है कि श्रीराम अवश्य मिलेंगे, क्योंकि मुझे अच्छे-अच्छे शकुन हो रहे हैं। यदि निश्चित समय बीत जाने और राम के न लौटने पर मेरे प्राण रह गये तो मुझ-सा नीच कौन होगा?"

राम विरह सागर महं, भरत मगन मन होत ।
विप्र रूप धरि पवनसुत, आइ गयउ जनु पोत ।।

इधर रामचंद्रजी के विरहरूपी समुद्र में भरतजी का मन डूब रहा था, उधर पवनपुत्र हनुमान ब्राह्मण का रूप धारण किये हुए आगये। उनका आना ऐसा था जैसे डूबते हुए को बचाने के लिए जहाज आ गया हो।

बैठे देखि कुसासन, जटामुकुट कृसगात ।
राम-राम रघुपति जपत, स्रवत नयन जलजात ।।

जिस समय हनुमान भरत के पास पहुंचे तो उनको कुश के

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
BANGALORE-1.

आसन पर बैठे देखा। वे जटाओं का मुकुट बनाये हुए थे। उनका शरीर दुर्बल हो गया था। वे राम-राम रघुपति जप रहे थे और उनके कमल रूपी नेत्रों से जल बह रहा था।

भरतजी को देखकर हनुमान बड़े प्रसन्न हुए। इसी तरह भरत भी हनुमान को देखकर बड़े आनन्दित हुए। उनके नेत्रों से प्रेमवश जल बहने लगा। उनका हृदय राम के प्रेम से गद्‌गद् हो उठा।

जासु बिरहं सोचहु दिन राती।
रटहु निरंतर गुन गन पांती॥
रघुकुलतिलक सुजन सुखदाता।
आयउ कुसल देव मुनि त्राता॥

हनुमान ने भरतजी से कहा, "हे भरत! जिनके विरह में आप दिन रात सोच करते रहते हैं और जिनके गुणों को आप निरंतर रटते हैं वे रघुकुल के तिलक, संत जनों को सुख देनेवाले, देवताओं और मुनियों के दुख को मिटानेवाले कुशलपूर्वक अयोध्या लौट आये हैं।"

रिपु रन जीति सुजस सुर गावत।
सीता सहित अनुज प्रभु आवत॥
सुनत बचन बिसरे सब दूखा।
तृषावंत जिमि पाइ पियूषा॥

हनुमान ने आगे कहा, "शत्रु को युद्ध में जीतकर सीताजी और लक्ष्मण के साथ प्रभु राम वापिस आरहे हैं। देवता उनके यश का गान गा रहे हैं।"

इन वचनों को सुनते ही भरत के सब दुख दूर हो गये। जैसे

प्यासा आदमी अमृत पाकर प्यास का दुख भूल जाता है, वैसे ही राम के आने का समाचार पाते ही भरत का मन प्रसन्न होगया।

को तुम्ह तात कहां तै आए।
मोहि परम प्रिय वचन सुनाए॥
मारुत सुत मैं कपि हनुमाना।
नामु मोर सुनु कृपानिधाना॥

भरत ने हनुमान से पूछा, "तुम कौन हो और कहां से आये हो? तुमने मुझको बड़ी प्यारी लगनेवाली बात सुनाई है।"

भरत ने हनुमान को हृदय से लगा लिया

हनुमानजी ने उत्तर दिया, "हे कृपानिधान! सुनिये, मैं पवन का पुत्र, वानर हनुमान हूं।"

इतनी बात सुनते ही भरत ने हनुमान को हृदय से लगा

लिया। उनसे मिलते समय भरत के हृदय में प्रेम उमड़ आया। नेत्रों से जल की धार बहने लगी और उनका शरीर पुलक उठा।

कपि तब दरस सकल दुख बीते।
मिले आजु मोहि राम पिरीते॥

भरत ने कहा, "हे हनुमान! तुम्हारे दर्शनों से मेरा सब दुख दूर हो गया। तुम्हारे रूप में मुझे आज राम ही मिल गये।"

इसके पश्चात् भरतजी ने सबकी कुशलता पूछी।

कहु कपि कबहुं कृपाल गोसाईं।
सुमिरहिं मोहि दास की नाईं॥

भरत पूछने लगे, "हनमान यह तो बताओ कि कृपालु श्रीराम कभी मुझे अपने दास के समान याद भी कर लेते थे या नहीं।?"

राम प्रानप्रिय नाथ तुम्ह, सत्य वचन मम तात।
पुनि पुनि मिलत भरत मुनि, हरष न हृदयं समात॥

हनुमानजी ने उत्तर दिया, "हे तात! आप प्रभ राम को प्राणों के समान प्यारे हैं। मेरा यह कथन बिलकुल सत्य है।"इतनी बात सुनकर भरत हनुमान से बार-बार मिले। उनके हृदय में हर्ष नहीं समाता।

भरत चरन सिर नाइ, तुरत गयउ कपि राम पहिं।
कही कुसल सब जाइ, हरषि चले प्रभु जान चढ़ि॥

इसके पश्चात् हनुमान भरत को सिर नवाकर रामचंद्रजी के पास चले दिये। वहां पहुंचकर उन्होंने राम को भरत की कुशलता का समाचार सुनाया। भरत की कुशलता का समाचार पाकर राम विमान पर चढ़कर अयोध्या की ओर चले।

हरषि भरत कौसलपुर आये ।
समाचार सब गुरहिं सुनाए ।।
पुनि मंदिर महं बात जनाई ।
आवत नगर कुसल रघुराई ।।

भरतजी प्रसन्न होकर अयोध्यापुरी पहुंचे। उन्होंने रामचंद्रजी के आने का समाचार सबसे पहले गुरु वशिष्ठ को सुनाया। फिर राज महल में खबर दी कि प्रभु राम, नगर में कुशलपूर्वक लौट आये हैं ।

सुनत सकल जननीं उठि धाईं ।
कहि प्रभु कुसल भरत समुझांई ।।
समाचार पुरबासिन्ह पाए ।
नर अरु नारि हरषि सब धाए ।।

यह समाचार मिलते ही सब माताएं उठ दौड़ीं। भरत ने प्रभु राम की कुशल बताकर सबको समझाया। फिर नगरवासियों ने श्रीराम के आने का समाचार पाया। स्त्री पुरुष सभी इस समाचार को पाकर महल की ओर दौड़े ।

: ४ :

## आनंदमग्न अयोध्या

जे जैसेहिं तैसेहिं उठि धावहिं ।
बाल वृद्ध कहैं संग न लावहिं ।।
एक एकन्ह कहं बूझहिं भाई ।
तुम्ह देखे दयाल रघुराई ।।

अयोध्यावासी जो भी जिस दशा में राम के आगमन का समाचार सुनता वह वैसे ही उनके दर्शनों के लिए चल देता था ।

बालक और बूढ़ों को वे साथ नहीं लेते थे। उन्हें यह डर था कि कहीं उनके कारण देर न हो जाय। अयोध्यावासी एक दूसरे से पूछने लगे, "कहो भाई ! क्या तुमने दयालु रामचंद्रजी को देखा ?"

प्रभु राम के आगमन के समाचार से अयोध्यापुरी में सर्वत्र मंगल छा गया। वह शोभा की धाम बन गई। बहुत-सी स्त्रियां अटारियों पर चढ़कर विमान को देखने लगीं। बहुत-से नगरवासी नगर के बाहर स्वागत करने के लिए दौड़ने लगे। बच्चों में भी भगवान राम के दर्शन करने का उत्साह उमड़ने लगा।

इधर राम अपने साथियों को दूर से ही अयोध्यापुरी दिखाने लगे। अपनी जन्मभूमि अयोध्या के दर्शनों से राम का मन भी पुलक उठा। चौदह वर्ष के बाद वह अपने नगर में फिर प्रवेश कर रहे थे। सीताजी और लक्ष्मणजी भी अत्यंत प्रसन्न थे।

सुनु कपीस अंगद लंकेसा।
पावन पुरी रुचिर यह देसा॥
जद्यपि सब बैकुंठ बखाना।
बेद पुरान बिदित जगु जाना॥
अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ।
यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ॥

राम अपने साथियों से कहने लगे, "हे सुग्रीव ! हे अंगद ! और लंकापति विभीषण ! सुनो, यह नगरी पवित्र है और यह देश बड़ा सुंदर है।"

बैकुंठ की चर्चा करते हुए राम कहने लगे, "सबने बैकुंठ की बड़ाई की है, यह बात वेद-पुराणों में प्रसिद्ध है और जगत भी इस

बात को जानता है। परंतु मुझे बैकुंठ अयोध्यापुरी के जितना प्यारा नहीं। मेरी इस बात को कोई-कोई ही जानता है।"

जन्म भूमि मम पुरी सुहावनि।
उत्तर दिसि बह सरऊ पावनि॥

श्रीराम अपनी जन्मभूमि की प्रशंसा करते हुए अंगद, हनुमान और विभीषण आदि को बताते हैं, "यह सुहावनी पुरी मेरी जन्म-भूमि है। इसके उत्तर में पवित्र सरयू बहती है।"

इसके पश्चात् राम वहां से नर-नारियों के संबंध में बताने लगे, "मुझे ये सब बड़े प्रिय लगते हैं।" अयोध्यापुरी का वर्णन सुनकर सुग्रीव, अंगद और हनुमान आदि सभी आनंदित हो उठे।

आवत देखि लोग सब, कृपा सिन्धु भगवान।
नगर निकट प्रभु प्रेरेउ, उतरेउ भूमि बिमान॥

कृपासिंधु भगवान राम ने जब सब लोगों को आते देखा तो उन्होंने विमान को अयोध्यापुरी के समीप उतरने की आज्ञा दी। विमान पृथ्वी पर उतर गया।

विमान के भूमि पर उतरने पर राम, लक्ष्मण तथा सीताजी बाहर आये। उनके अन्य सब साथी भी उतर गय। तब राम ने विमान को कुबेर के पास वापस भेज दिया।

अयोध्या की जनता भरत को साथ लेकर राम के दर्शनों के लिए आई। श्रीराम के वियोग में इन सबके शरीर दुर्बल होगये थे। जब श्रीराम ने वशिष्ठ आदि मुनिश्रेष्ठों को देखा तो उन्होंने धनुष-बाण पृथ्वी पर रख दिये।

: ५ :

# मंगल मिलन

धाइ धरे गुर चरन सरोरुह ।
अनुज सहित अति पुलक न तनोरुह ।।
भेटि कुसल बूझी मुनिराया ।
हमरें कुसल तुम्हारिहिं दाया ।।

रामचंद्रजी ने अपने छोटे भाई लक्ष्मणसहित आगे बढ़कर गुरुजी के चरणों को पकड़ लिया। उनके रोम-रोम अत्यंत पुलकित होगये।

गुरु वशिष्ठ ने उनको गले से लगा लिया और उनकी कुशलता पूछी। श्रीराम ने उनको बड़े ही भावभरे शब्दों में उत्तर दिया, "आप ही की दया से हम सब कुशल हैं।" राम ने समस्त ब्राह्मणों को मस्तक नवाकर नमस्कार किया।

गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज ।
नमत जिन्हहि सुर मुनि संकर अज ।।
परे भूमि नहिं उठत उठाये ।
बल करि कृपा सिंधु उर लाए ।।
स्यामल गात रोम भए ठाढ़े ।
नव राजीव नयन जल बाढ़े ।।

राम ने गुरु वशिष्ठ और ब्राह्मणों का सत्कार कर लिया तो उसके पश्चात् भरत ने श्रीरामजी के उन कमलरूपी चरणों को पकड़ा, जिन्हें देवता, मुनि, शंकर और ब्रह्मा भी नमस्कार करते हैं।

भरत भूमि पर पड़े हैं। वह उठाये से नहीं उठ रहे। ऐसी दशा में राम ने उन्हें बरबस उठाया और अपने गले से लगा लिया। भरत को गले लगाते ही राम को रोमांच हो आया। उनके नवीन कमल के समान नेत्रों में प्रेम का जल भर आया। इसके पश्चात् श्रीराम ने भरत से कुशल समाचार पूछा। प्रेमवश भरत कोई उत्तर नहीं दे पाये।

फिर श्रीराम ने हर्षित होकर शत्रुहन को हृदय से लगाया। भरत और लक्ष्मण भी बड़े प्रेम के साथ मिले।

भरतानुज लछिमन पुनि भेंटे।
दुसह बिरह संभव दुख मेटे॥
सीता चरन भरत सिरु नावा।
अनुज समेत परम सुख पावा॥

फिर शत्रुहन और लक्ष्मण एक दूसरे से गले मिले और इस प्रकार एक दूसरे से अलग होने से जो विरह दुख उत्पन्न होगया था वह सब मिट गया।

भरतजी ने अपने छोटे भाई शत्रुहनसहित सीताजी के चरणों में सिर नवाया और परम आनंद प्राप्त किया।

इसके पश्चात् श्रीराम ने पुरवासियों को देखा। वे सभी उनसे मिलने के लिए उतावले हो रहे थे। श्रीराम ने बहुरूप धारण करके सबसे भेंट की। पुरवासी हर्ष से गद्गद् हो उठे।

एहि विधि सबहिं सुखी करि रामा।
आगें चले सील गुन-धामा॥

इस तरह से भगवान राम ने सबको अपने प्रेम से सुखी कर दिया। फिर वह सबसे आगे होकर महल की तरफ चले।

कौसल्यादि मातु सब धाईं।
निरखि बच्छ जन धेनु लवाईं ।।

**कौशल्या और अन्य माताएं सब ऐसी दौड़ीं जिस प्रकार नई ब्याई हुई गाय अपने बछड़े को देखकर दौड़ती है। श्रीराम अपनी सब माताओं से मिले और उनसे कोमल शब्दों में वार्तालाप किया। माताओं का मन अपने पुत्रों और सीताजी को देखकर प्रसन्न हो रहा था। कौशल्या ने राम और लक्ष्मण को गले लगाकर प्यार किया। सुमित्रा ने भी अपने पुत्र लक्ष्मण को गले लगाया। श्रीराम से मिलते हुए कैकेई के मन में कुछ संकोच हुआ।**

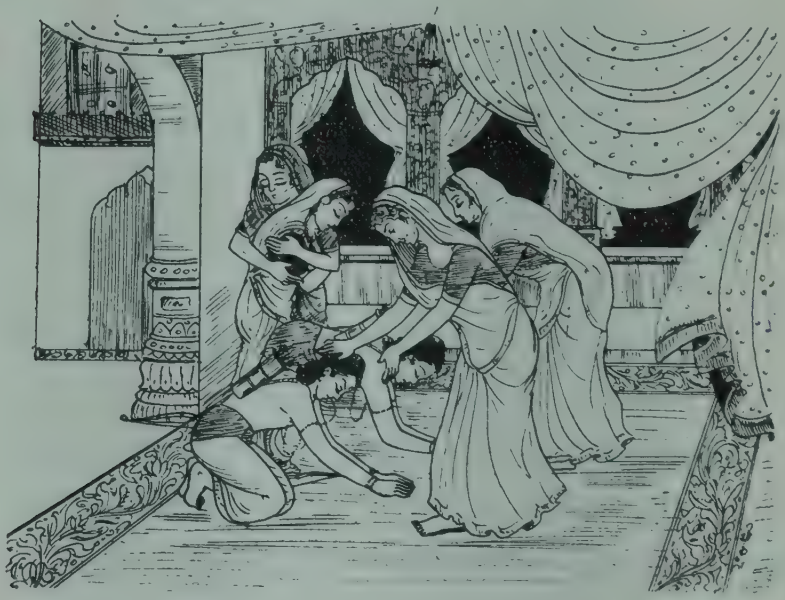

राम-लक्ष्मण अपनी माताओं के चरणों में गिर पड़े।

लछिमन सब मातेन्ह मिलि, हरषे आसिष पाइ।
कैकइ कहं पुनि पुनि मिले, मन कर छोभु न जाइ ।।

लक्ष्मण सब माताओं से मिले और उनका आशीर्वाद पाकर वे बड़े प्रसन्न हुए। वह कैकेई से बार-बार मिले परंतु उनके मन का क्षोभ नहीं गया।

सासुन्ह सबनि मिली बैदेही।
चरननन्हि लागि हरषु अति तेही॥
देहि असीस बूझि कुसलाता।
होइ अचल तुम्हार अहिवाता॥

सीताजी अपनी सब सासुओं से मिलीं। उनके चरण छूने से उन्हें अपार हर्ष हुआ। उन्होंने सीताजी को आशीर्वाद देते हुए कहा, "तुम्हारा सौभाग्य अचल हो।"

सब रघुपति मुख कमल बिलोकहिं।
मंगल जानि नयन जल रोकहिं॥
कनक थार आरती उतारहिं।
बार-बार प्रभु गात निहारहिं॥

माताएं श्रीराम के मुख-कमल को देख रही हैं। उनकी आंखों में प्रेम का जल भर रहा है, परंतु शुभ अवसर जानकर वे उस जल को आंखों में ही रोक रही हैं और उसे भूमि पर नहीं गिरने देतीं। वे सोने के थाल लेकर आरती उतारती हैं और बार-बार श्रीराम के शरीर को देखती हैं। वे तरह-तरह की वस्तुएं न्यौछावर करती हैं।

माताएं अपने पुत्रों की कोमलता को देखकर इस बात पर आश्चर्य करती हैं कि उन्होंने रावण को किस प्रकार मारा होगा।

अति सुकुमार जुगल मेरे बारे।
निसिचर सुभट महाबल भारे॥

कौशल्या राम के प्रेम में भरकर कहती हैं, "मेरे दोनों बालक तो बड़े ही सुकुमार हैं। वे राक्षस तो बड़े बलवान थे। उनको इन्होंने किस तरह से मारा होगा।"

रामचंद्रजी, हनुमान, अंगद, सुग्रीव, नल, नील और विभीषण को साथ लेकर गुरु वशिष्ठ के समीप पहुंचे। उन्होंने अपने इन साथियों को बताया, "गुरु वशिष्ठजी हमारे कुल पूज्य हैं। हमने इनकी कृपा से ही राक्षसों पर विजय प्राप्त की है।"

ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे।
भये समर सागर कहँ बेरे॥
मम हित लागि जन्म इन्ह हारे।
भरतहु तें मोहि अधिक पियारे॥

राम ने गुरु वशिष्ठ को अपने सब सखाओं का परिचय दिया और कहा, "हे मुनि! ये सब मेरे मित्र हैं। ये युद्ध में मेरे सहायक बने थे। इन्होंने मेरे लिए अपने जीवन की बाजी लगा दी थी। ये सब मुझे भरत से भी अधिक प्यारे हैं।"

राम की इस तरह की प्रेमभरी वाणी को सुनकर हनुमान, सुग्रीव, नल, अंगद आदि सब हर्षित होगये।

फिर वे सब माता कौशल्या से मिले और इस तरह के मिलन और परिचय के पश्चात् नगर में राम की शोभा-यात्रा निकालने की तैयारी की गई। नगर की देवियों ने अपनी अटारियों पर चढ़-कर पुष्पों की वर्षा की।

कंचन कलस विचित्र सदारे।
सबहिं धरे सजि निज निज द्वारे॥

बंदनवार पताका केतू।
सबन्हि बनाये मंगल हेतू॥
बीथी सकल सुगंध सिचाई।
गजमनि रचि बहु चौक पुराई॥

अयोध्या की जनता ने अपने-अपने द्वारों पर सोने के कलश सजा-सजाकर रखे। सभीने मंगल के लिए बंदनवार, ध्वजा और पताकाएं सजाईं। अयोध्या की गलियों में सुगंधित वस्तुएं छिड़की गईं। गज मुक्ताओं से संवारकर बहुत स्थानों पर चौके पूरे गये।

चारों ओर हर्ष छा गया। नगाड़े बजने लगे। प्रत्येक नगर-वासी ने अपने प्रेम को प्रकट करने के लिए अपनी प्यारी-से-प्यारी वस्तु से सजावट की। स्त्रियों ने राम पर तरह-तरह की वस्तुएं न्यौछावर कीं। वे उनकी आरती भी उतारती थीं। इस तरह से अयोध्या नगरी में राम की शोभा-यात्रा निकाली गई। शोभा-यात्रा की समाप्ति पर राम सबसे पहले कैकई के राजमहल में गये। वह समझ रहे थे कि कैकई कुछ लजा रही हैं। इसलिए राम ने कैकई को अनेक प्रकार से समझाया। राम के वार्तालाप से कैकई को बहुत सुख मिला। इसके पश्चात् राम अपने राजभवन में गये।

: ६ :

## राम का राजतिलक

कृपासिंधु जब मंदिर गये।
पुर नर नारि सुखी सब भयै॥
गुर बसिष्ठ द्विज लिये बुलाई।
आजु सुघरी सुदिन समुदाई॥

H.000795
GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA

सब द्विज देहु हरषि अनुसासन ।
रामचन्द्र बैठहिं सिंघासन ।।

जिस समय कृपा के सागर राम अपने महल में गये तब नगर के सब स्त्री-पुरुष बड़े ही प्रसन्न हुए । उसी समय गुरु वशिष्ठ ने अयोध्या के समस्त ब्राह्मणों को भी बुलाया । उन्होंने उनके आने पर कहा, "आज का दिन बड़ा सुखदायक है । आज की घड़ी भी बड़ी शुभ है । इसलिए आप सब मिलकर हर्ष के साथ आज्ञा दीजिये कि राम राजसिंहासन पर बैठें ।"

गुरु वशिष्ठ की बात सुनकर सारे ब्राह्मण प्रसन्न हो उठे । वे तो ऐसी शुभ घड़ी की प्रतीक्षा में थे ही । उन्होंने तत्काल अपनी स्वीकृति दे दी ।

कहहिं वचन मृदु बिप्र अनेका ।
जग अभिराम राम अभिषेका ।।
अब मुनिबर बिलंबु नहिं कीजै ।
महाराज कहं तिलक करीजै ।।

बहुत-से ब्राह्मणों ने अपनी सम्मति देते हुए कहा, "रामचंद्रजी का राज्य-सिंहासन पर बैठना जगत के लिए आनंद देनेवाला है । इसलिए हे मुनि श्रेष्ठ! अब आप इस कार्य में देर न कीजिये और तत्काल उनको तिलक कर दीजिये ।"

गुरु वशिष्ठ ने ब्राह्मणों की स्वीकृति पाकर राम के राजतिलक की तैयारी प्रारंभ कराई । उन्होंने सुमंत को आज्ञा दी कि वह राजतिलक की सामग्री तुरंत इकट्ठी कराये । गुरु वशिष्ठ की आज्ञा मिलते ही सुमंत राजतिलक का सामान मंगाने में लग गये ।

जिस समय राम के राजतिलक का समाचार नगरवासियों

को मिला तो उन्होंने भी नगर को सजाना प्रारंभ कर दिया। राम ने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि वे हनुमान, सुग्रीव, अंगद आदि सबको स्नान करावें।

पुनि करुनानिधि भरत हंकारे।
निज कर राम जटा निरुआरे॥

रामचंद्रजी ने भरत को बुलवाया। उनके आने पर राम ने अपने हाथ से भरत की जटाओं को संवारा। राम ने अपने सामने ही तीनों भाइयों को स्नान कराया। उन्होंने अपने सिर की जटाओं को अपने-आप सुलझाया। उन्होंने गुरु की आज्ञा पाकर स्वयं भी स्नान किया।

सासुन्ह सादर जानकिहि, मज्जन तुरत कराइ।
दिव्य वसन वर भूषन, अँग अँग सजे बनाइ॥

सीताजी को उनकी सासुओं ने स्नान कराया और सुंदर और बहुमूल्य वस्त्राभूषण पहनाये।

प्रभु बिलोकि मुनि मन अनुरागा।
तुरत दिव्य सिंघासन मांगा॥
रवि सम तेज सो बरनि न जाई।
बैठे राम द्विजन्ह सिरु नाई॥

इस तरह से स्नान आदि करने के बाद राजभवन की ओर प्रस्थान किया। वशिष्ठजी ने तुरंत राजसिंहासन मंगाया। सिंहासन बड़ा सुंदर, मणि-मुक्ताओं से बना हुआ था। राम और सीताजी को देखकर गुरु वशिष्ठ ने उन्हें राज-सिंहासन पर बैठने की आज्ञा दी।

सबसे पहले मुनि वशिष्ठ ने तिलक किया

जनकसुता समेत रघुराई ।
पेखि प्रहरषे मुनि समुदाई ।।
बेदमंत्र सब द्विजन्ह उचारे ।
नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे ।।

**सीताजी और रामचंद्रजी दोनों राजसिंहासन पर विराजमान होगये । उनको राजसिंहासन पर बैठे देखकर मुनियों का मन बड़ा प्रसन्न हुआ । ब्राह्मणों ने वेद-मंत्रों का गान प्रारंभ कर दिया । देवता और मुनि राम की "जय हो, जय हो" पुकारने लगे ।**

प्रथम तिलक बसिष्ठ मुनि कीन्हा ।
पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा ।।

सुत बिलोकि हरषीं महतारी।
बार बार आरती उतारी॥

राम के सिंहासन पर बैठने के पश्चात् सबसे पहले मुनि वशिष्ठ ने तिलक किया। फिर उन्होंने सब ब्राह्मणों को तिलक करने की आज्ञा दी। राम को राजसिंहासन पर बैठे देखकर माताएं बड़ी प्रसन्न हुईं। उन्होंने बार-बार राम की आरती उतारी।

बिप्रन्ह दान बिबिध बिधि दीन्हे।
जाचक सकल अजाचक कीन्हे॥
सिंघासन पर त्रिभुअन सांई।
देखि सुरन्ह दुंदुभीं बजाई॥

माताओं ने इस अवसर पर ब्राह्मणों को अनेक प्रकार के दान दिये। मांगनेवालों को उन्होंने इतना दान दिया कि वे सदा के लिए न मांगनेवाले हो गये। तीनों लोकों के स्वामी भगवान राम को सिंहासन पर बैठा देखकर देवताओं ने दुंदुभी बजाई। राम की स्तुति करके देवता अपने-अपने स्थानों को लौट गये और पुष्प वर्षा होने लगी।

राम के राजतिलक होने पर अयोध्या नगरी में सर्वत्र आनंद-ही-आनंद छा गया। प्रजा में सब तरह से सुख फैलने से रामराज्य की महिमा गाई जाने लगी। राम अपनी प्रजा की सब तरह से देखभाल करने लगे। उनका इस बात पर विशेष ध्यान रहता था कि सभी प्रजाजन सुखी रहें। परिणाम यह हुआ कि राज्यभर में सुख और संपत्ति बढ़ने लगी।

: ७ :

# मित्रों को विदाई

रामचंद्रजी के सखा सुग्रीव, हनुमान, अंगद, नल, नील तथा विभीषण आदि को अयोध्या में रहते हुए छः मास बीत गये ! वे सब बड़े प्रसन्न थे। राम के प्रेम में वे अपने घर की सुधि ही भुला बैठे।

तब रघुपति सब सखा बोलाए।
आइ सबन्हि सादर सिरु नाए॥
परम प्रीति समीप बैठारे।
भगत सुखद मृदु बचन उचारे॥
तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई।
मुख पर केहि विधि करौं बड़ाई॥

रामचंद्रजी ने अपने सब सखाओं को बुलाया। उन सबने वहां आकर उनको को सिर नवाया। राम ने उनको प्रेमपूर्वक अपने पास बिठा लिया। उन्होंने मीठे शब्दों में कहा, "तुम सबने मेरी बड़ी सेवा की है। मैं तुम्हारे मुंह पर किस तरह से तुम्हारी बड़ाई करूं ?"

अब गृह जाहु सखा सब, भजेहु मोहि दृढ़ नेम।
सदा सर्बगत सर्बहित, जानि करेहु अति प्रेम॥

राम ने अपने सखाओं को समझाते हुए कहा, "हे सखाओ ! अब आप सब अपने-अपने घरों को वापस जाओ। मुझे नियम के साथ स्मरण करते रहना। मुझे सर्वव्यापक और सबका हित करने-वाला समझकर मुझसे सदा प्रेम करते रहना।"

राम की बात सुनकर सुग्रीव, हनुमान, नल, नील, अंगद

तथा विभीषण सभी विमूढ़-से खड़े रह गये। अत्यंत प्रेम के कारण कुछ कह न सके। परंतु राम के बहुत कहने पर वे अपने घरों को लौटने के लिए तैयार होगये। परंतु बालि-पुत्र अंगद ने कहा--

मोरे तुम्ह प्रभु गुर पितु माता।
जाउं कहां तजि पद जलजाता॥
तुम्हहि बिचारि कहहु नरनाहा।
प्रभु तजि भवन काज मम काहा॥

"मेरे तो हे राम! आप ही गुरु, पिता और माता हैं। आपके कमलरूपी चरणों से अलग होकर मैं कहां जाऊं? आप ही विचार कर बताओ कि मैं आपको छोड़कर घर क्यों जाऊं? वहां मेरा क्या काम है?"

राम ने अंगद को गले से लगा लिया। उन्होंने समझाया कि वह अपने स्थान को ही चला जाय। राम ने अंगद के गले में अपनी मणियों की माला पहना दी और उसको बहुत तरह से समझाकर घर जानें के लिए तैयार किया।

रामचंद्रजी ने उनको अनेक प्रकार के मूल्यवान वस्त्र पहनाये और फिर उनको आदर के साथ विदा किया। लक्ष्मण, भरत और शत्रुहन तीनों भाइयों ने उनको नगर के बाहर तक आदर के साथ पहुंचाया। हनुमान ने सुग्रीव से प्रार्थना की, "मुझे कुछ दिन के लिए अयोध्या में रहने की आज्ञा दीजिये। मैं भगवान राम की कुछ दिन और सेवा करना चाहता हूं।" सुग्रीव ने उनकी बात मान ली। हनुमान दस दिन तक और अयोध्या में ठहरे।

# MAHATMA GANDHI MEMORIAL LIBRARY

5, Kumara Park (East), Bangalore-1

## DATE LABLE

CL. No. D152.1TUL W3N57 Accn. No. H·000795

This book ought to be returned on or before the date last marked below, or fines will be incurred.

| Due Date | Ticket No. | Inls. | Due Date | Ticket No. | Inls. |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | |

Call No.....

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE.....
ACC. NO.....
CALL NO.....

**Mahatma Gandhi Memorial Library**
5, Kumara Park (East), Bangalore-1

BOOK CARD

CL No 0152, ITVL W3NS7 Acc. No H-000795

*Author* PREMI (Vishvambhar) ( ).

*Title* Rajtilak.

| Ticket No. | Issue Date | Return Date | Ticket No. | Issue Date | Return Date |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |

0152, ITVL
W3NS7
H-000795

## तुलसी-राम-कथा-माला की पुस्तकें

१. राम-जन्म
२. धनुष-यज्ञ
३. राम-विवाह
४. राम-वनगमन
५. भरत-भेंट
६. पंचवटी में
७. सीता-हरण
८. सुग्रीव से मित्रता
९. सीता की खोज
१०. लंका-दहन
११. रामदूत अंगद
१२. लक्ष्मण-शक्ति
१३. लंका-विजय
१४. राज-तिलक

सत्साहित्य प्रकाशन

सैंतीस नये पैसे